नंदबाग में गटर में से गुजर रही नर्मदा, नगर निगम की अनदेखी से लोगों का जीना मुहाल

- सोम प्रोजेक्ट की लेतलाली से क्षेत्र के रहवासी त्रस्त
- क्षेत्र में 'भागीरथपुरा' की पुनरावृत्ति की आशंका
- नाला निर्माण ठप होने से रोज लगता है वाहनों का जाम
- खुला नाला और उसमें प्रवाहित हो रहा कचरा
- आठ माह से काम बंद, फिर भी प्रगति का सूचना बोर्ड

इंदौर. बाणगंगा को सुपर कॉरिडोर से जोड़ने वाले नंदबाग मेन रोड पर सड़क और नाला निर्माण में नगर निगम की अनदेखी से लोगो का जीना मुहाल हो गया है. नगर निगम ने यहां सोम प्रोजेक्ट को ठेका दिया है, जिसका काम पिछले आठ माह से बंद पड़ा हुआ है. यद्यपि ठेकेदार कंपनी ने निर्माण स्थल पर कार्य प्रगति का सूचना बोर्ड लगा रखा है. यह इस क्षेत्र का सबसे व्यस्ततम मार्ग है, जिसमें खुला नाला और गटर के बीच से नर्मदा की पेयजल पाइप लाइन भी गुजर रही है. नाला खुला होने से इस मार्ग पर दिनभर जाम लगा रहता है. इधर, लोगों को यह आशंका है कि इस पाइप लाइन से दूषित पानी के कारण उनके यहां भी भागीरथपुरा जैसी घटना की पुनरावृत्ति हो सकती है. नाला खुला होने से हर समय दुर्घटना का डर भी बना रहता है.

सतत आठ बार सबसे साफ शहर का तमगा हासिल शहर की दूसरे सबसे बड़े रहवासी इलाके में नगर निगम की अनदेखी लोगों पर भारी पड़ रही है. नंदबाग क्षेत्र में दर्जनभर से ज्यादा बस्तियां है और इसका मेन रोड बाणगंगा सहित शहर को सुपर कॉरिडोर से जोड़ता है. उधर, सुपर कॉरिडोर के पास भी कई बस्तियों ने आकार ले लिया है, जिसका आवागमन भी इसी रोड पर होता है. इस रोड पर जगह-जगह निर्माण अधूरा छोड़े जाने के व्यवधान बने हुए हैं. सबसे ज्यादा दुर्गति मेन रोड पर सद्गुरु स्कूल के सामने हो रही है. यहीं पर दुर्गा कालोनी का मुख्य पहुंच मार्ग भी है. दिनभर इस मार्ग पर आवाजाही बनी रहती है. सुपर कॉरिडोर की ओर जाने वाला मार्ग की तरफ का एक सिरा बन चुका है, जबकि दूसरे सिरे का काम पिछले आठ माह से बंद पड़ा है. रोड के निर्माण के साथ-साथ ठेकेदार को ड्रेनेज और पेयजल पाइप लाइन का निर्माण भी करना है.

कचरा कूड़ा डाल रहे लोग-गौरतलब है कि सोम प्रोजेक्ट को सड़क निर्माण के साथ पानी और ड्रेनेज लाइन का ठेका भी दिया है. निर्माण कार्य ठप होने से पानी की लाइन ड्रेनेज लाइन के बीच से ही गुजर रही है और जिस जगह नाली का निमार्ण किया जाना है, वहां अब कचरा कूड़ा डाला जा रहा है. ड्रेनेज और पानी लाइन के पास की नाली में कचरा कूड़ा डाले जाने से यहां का पानी भी सडांध मारने लगा है. इसी नाले के पास से दिनभर वाहनों की आवाजाही बनी रहती है. इसमें अब तक कई दुर्घटनाएं हो चुकी है. शायद नगर निगम किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार कर रहा है.

आधा घंटा ही भर पाते हैं पानी-पेयजल की पाइप लाइन ड्रेनेज लाइन के पास से गुजरने के कारण क्षेत्रवासी नल मे जलप्रवाह होने के आधा घंटा पीने का पानी भर पाते हैं. क्षेत्रवासियों को गटर के बीच पानी की लाइन गुजरने से यहां भी भागीरथपुरा की पुनरावृत्ति होने की आशंका बनी हुई है.

क्या बोले रहवासी...

✍ नंदबाग के आधे-अधूरे नाले के पास स्थित रानी जनरल स्टोर के मुकेश यादव का कहना है कि रोड पर नाले का निर्माण नहीं किए जाने से यहां दिनभर जाम लगता रहता है. वाहन चालक गिरते-पड़ते रहते हैं. इसी नाले के पास उनके मोहल्ले में जलप्रदाय करने वाली पाइप लाइन भी गुजर रही है. आशंका है कि इस पानी की लाइन में ड्रेनेज का पानी मिल रहा है, क्योंकि यहां का नाला पानी रुके होने के कारण सड़ाध मारता रहता है.

✍ नंदबाग रोड से सटी दुर्गा कालोनी के रहवासी ओमप्रकाश मालवीय का कहना है कि यहां नगर निगम ने सोम प्रोजेक्ट को ठेका दिया था. जिसका निर्माण कार्य लम्बे समय से चल रहा था, लेकिन विगत आठ-नौ माह से काम बंद पड़ा है. इस संबंध में वे सोम प्रोजेक्ट के सुपरवाइजर महेन्द्र पटेल से कई बार शिकायत कर चुके हैं, मगर काम शुरू होने का नाम नहीं ले रहा है.

✍ गोविंद सिसौदिया ने अपनी पीड़ा बताते हुए नगर निगम को ही कोसा. निगम अधिकारी तो ठेका देकर भूल गए और निर्माण की प्रगति का जायजा लेने आज तक यहां कोई नहीं आया है. वे कहते हैं- 'आप यहां देख सकते हैं कि नगर निगम और ठेकेदार कंपनी ने संयुक्त रूप से एक सूचना बोर्ड लगा रखा है, जिसमें लिखा है कि कार्य प्रगति पर है', जबकि काम आठ माह से बंद पड़ा है. इसका खामियाजा जनता को भुगतना पड़ रहा है.

✍ नंदबाग की गली नंबर एक पर रहने वाले विनोद लोवंशी नाले का खुला छोड़ने और पानी की लाइन को गटर के पास से गुजरने पर रोष जताते हुए कहते हैं कि यही आलम रहा तो यहां भी भागीरथपुरा की पुनरावृत्ति हो सकती है. बावजूद इसके यहां के नाले में कचरा डाल कर चमचमाते शहर को निरंतर गंदा किया जा रहा है.

बारह दिन बाद भी नहीं मिला जहरीला पानी मिलने का प्वाइंट!

नव भारत न्यूज

इंदौर. शहर के भागीरथपुरा क्षेत्र की नर्मदा जलप्रदाय लाइन में जहरीला पानी मिलने का पता नगर निगम आज तक नहीं लगा पाया है. खास बात यह है कि पूरे क्षेत्र में नगर निगम, ड्रेनेज विभाग, स्वास्थ विभाग के अधिकारी और कर्मचारी सब जहरीला पानी ढूंढने में लगे हुए हैं. उक्त क्षेत्र में अभी भी रोज मरीजों का पता चल रहा है और अस्पताल में भर्ती होने का सिलसिला जारी है. इससे समझा जा सकता है कि नगर निगम ने नर्मदा जलप्रदाय लाइन कितनी लापरवाही से डाली है!

ध्यान रहे कि नगर निगम के नर्मदा जल वितरण प्रणाली में लापरवाही के कारण भागीरथपुरा क्षेत्र के हजारों लोग बीमार हो गए. 20 से ज्यादा लोगों की मृत्यु हो गई. उक्त घटना की 12 दिन बीत चुके हैं और आज भी क्षेत्र में मरीजों के सामने आने का सिलसिला लगातार जारी है. इतना ही नहीं कल रात भी दो बच्चे चाचा नेहरू हॉस्पिटल में भर्ती हुए है. इसकी पुष्टि स्वास्थ विभाग ने की है. आज 12 दिन बीतने के बाद भी नगर निगम के अधिकारी और कर्मचारी जहरीला पानी नर्मदा लाइन में कहा से मिल रहा है? उसका पता नहीं लगा पा रहे है. इसको इस तरह से देखे कि नर्मदा लाइन बिछाते समय निगम इंजीनियर, अधिकारी, पार्षद और ठेकेदार के काम के देखरेख ही नहीं की है. मनचाहे तरीके और बिना सोचे समझे पाइप डाल दिए और टंकी से जोड़ दिया. यह लापरवाही का सबूत है कि नर्मदा लाइन में संक्रमित, दूषित और जहरीला पदार्थ मिल रहा है और अधिकारी ढूंढ नहीं पा रहे हैं.

लाइन जोड़े बिना ही कर दी टेस्टिंग, खुल गई पोल

कल नगर निगम ने भागीरथपुरा क्षेत्र में नर्मदा टंकी से पानी सप्लाई किया था. हालांकि रहवासियों को पानी उपयोग करने की मनाही थी. टेस्टिंग के दौरान निगम अधिकारियों ने एक जगह लाइन ही नहीं जोड़ी और एक स्थान पर लाइन के वाल पर ही मिट्टी डाल कर दबा दिया और वॉल खुला था. जैसे ही पानी सप्लाई शुरू किया, वैसे ही क्षेत्र के कई इलाकों में सड़कों और गलियों में पानी बह निकला.

संभावित जगहों पर सर्च कर रहे हैं : आयुक्त

नगर निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल ने कहा कि क्षेत्र में संभावित जगहों पर सर्च कर रहे है. जहां जहां लीकेज है, पानी, ड्रेनेज लाइन की भी जांच की जा रही है. क्षेत्र में स्वास्थ विभाग, नगर निगम और ड्रेनेज विभाग द्वारा सप्लाई लाइन चेक की जा रही है. मैन प्वाइंट पर अभी तक नहीं पहुंच पाए हैं. नर्मदा लाइन को हर जगह देखकर कार्य किया जा रहा है.

वाटर ऑडिट में 'सबसे स्वच्छ शहर' का दावा बेनकाब : उमंग सिंघार

नव भारत न्यूज

इंदौर. नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने इंदौर जल-प्रदूषण कांड के बाद आज वाटर ऑडिट का निष्कर्ष बताते हुए कहा कि देश के सबसे स्वच्छ शहर का दावा बेनकाब हो गया है. शहर के अधिकांश इलाकों में पीने का गंदा और बदबूदार पानी सप्लाई किया जा रहा है.

वाटर ऑडिट में यह साफ हो गया है कि इंदौर का जल संकट कोई अपवाद नहीं, बल्कि भाजपा के शहरी शासन मॉडल की असफलता है. जब तक साफ़ पानी, जवाबदेही, पारदर्शिता और दोषियों पर ठोस कार्रवाई नहीं होती, तब तक विपक्ष जनता की इस लड़ाई को सड़क से सदन तक पूरी ताकत से लड़ता रहेगा.

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंगार ने कहा कि भगीरथपुरा से लेकर इंदौर के कई गरीब व मेहनतकश इलाक़ों तक नलों से आ रहा दूषित, बदबूदार और सीवरेज मिला पानी इस बात का प्रमाण है कि यह केवल एक इलाक़े की समस्या नहीं, बल्कि पूरे शहरी प्रशासन की असफलता है.

नेता प्रतिपक्ष ने सिंगार ने मुख्यमंत्री मोहन यादव पर कटाक्ष करते हुए कहा कि स्वच्छता के अवॉर्ड से लोग ज़िंदा नहीं रहते है. ज़िंदा रहने के लिए साफ़ पानी चाहिए, जो आपकी सरकार नहीं दे पा रही है. सिंगार ने मांग की है कि निगम के अधिकारी और महापौर सहित सभी जिम्मेदारों पर एफआईआर दर्ज कर कार्यवाई की जाए ताकि ऐसी घटना दोबारा ना हो.

कलेक्टर, निगम आयुक्त के खिलाफ याचिका दायर

- गैर इरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज करने की मांग

नव भारत न्यूज

इंदौर. आज प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट कोर्ट में भागीरथपुरा की घटना को लेकर मुकदमा दायर किया गया है. मुकदमे में कलेक्टर, निगमायुक्त, अपर आयुक्त, अधीक्षण अभियंता एवं अन्य अधिकारियों पर गैर इरादतन हत्या का प्रकरण दर्ज करने का परिवाद प्रस्तुत किया गया है.

एडवोकेट दिलीप नागर ने आज परिवादी रामू पिता रूपसिंह निवासी मोहता नगर, भागीरथपुरा के नाम से याचिका दायर की गई है. उक्त याचिका में भागीरथपुरा में

3 साल से दूषित पानी सप्लाई, टेंडर रोकने, शिकायत पर ध्यान नहीं देने और दूषित पानी से मौत होने एवं सैकड़ों की संख्या रहवासियों के बीमार होने का कारण बताया गया है. उक्त कारणों को आधार बनाकर अधिवक्ता दिलीप कुमार नागर ने धारा 223 भारतीय न्याय नागरिक सुरक्षा में प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी की कोर्ट में परिवाद दायर किया है. इसके तहत कलेक्टर शिवम वर्मा, पूर्व निगम आयुक्त दिलीप कुमार यादव, अपर आयुक्त रोहित सिसोनिया, नर्मदा प्रभारी अधीक्षण यंत्री संजीव श्रीवास्तव और अन्य संबंधित अधिकारियों के खिलाफ बीएनएस की धारा 105,106,125 और 271 के तहत गैर इरादतन हत्या का प्रकरण दर्ज करने की याचिका लगाई गई है.

भागीरथपुरा जल कांड के आखिर कौन हैं असली गुनहगार..?

ओपी श्रीवास्तव

भागीरथपुरा में दूषित जल आपूर्ति ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि शहर के विकास मॉडल में चमक दमक भले ही दिखे, पर व्यवस्था की तकनीकी नींव कितनी कमजोर है! जिस शहर को स्वच्छता में देश का सर्वोच्च दर्जा मिलता रहा, वहीं के नागरिक जब प्रदूषित पानी पीने को मजबूर हों, तो यह केवल प्रशासनिक असफलता नहीं, बल्कि व्यवस्था की सोच पर भी गंभीर प्रश्न है.

दुर्भाग्य यह है कि इस पूरे प्रकरण को भी वही पुराना रास्ता मिला-जनप्रतिनिधि और प्रशासन एक-दूसरे पर दोष मढ़ते रहे, और जनता की परेशानी राजनीतिक बयानबाजी की भेंट चढ़ गई. सोशल मीडिया ने भी उसी दिशा में बहाव पकड़ा- किसने क्या कहा, किसने किसे घेरा—लेकिन मूल प्रश्न यह है कि असली गुनाहगार कौन है?

तकनीकी जिम्मेदारी सबसे बड़ी, लेकिन सबसे कम जांच- मध्यप्रदेश नगर पालिका अधिनियम, 1961 तथा नगर निगम अधिनियम, 1956 के अनुसार किसी भी सार्वजनिक निर्माण कार्य में डीपीआर सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज होता है. पाइपलाइन बिछाने से लेकर मार्ग निर्धारण, प्रदूषण की संभावना,

दृष्टिकोण

सुरक्षा, निरीक्षण- इन सबकी प्राथमिक जिम्मेदारी इंजीनियरिंग तंत्र की होती है. इसके बाद तकनीकी स्वीकृति, फिर प्रशासकीय स्वीकृति दी जाती है. कार्य ठेकेदार करता है, लेकिन इंजीनियरिंग विभाग की देखरेख में. कार्य पूर्ण होने पर एमबी (मेजरमेंट बुक) और निरीक्षण रिपोर्ट तैयार होती है- यही असली सच्चाई बताते हैं. ऐसे में सवाल यह है कि- पाइपलाइन जिस क्षेत्र से गुजरी, वहां जोखिम का आकलन हुआ या नहीं? डीपीआर में संभावित खतरों का उल्लेख किया था या उसे केवल औपचारिकता बना दिया गया? निरीक्षण वास्तव में हुआ या सिर्फ कागजों में दर्ज हुआ? यदि ये बिंदु स्पष्ट नहीं होते, तो चाहे जितने बयान दिए जाएँ, समस्या की जड़ उजागर नहीं होगी. भागीरथपुरा का प्रकरण केवल एक स्थानीय मुद्दा नहीं, बल्कि एक चेतावनी है- शहर विकास का मॉडल कागजों पर नहीं, जमीन पर सुरक्षित हो. स्वच्छता पुरस्कारों से ज्यादा जरूरी है नागरिकों का सुरक्षित जीवन, और इसके लिए तकनीकी जवाबदेही सुनिश्चित करना ही पहला कदम है.

न्यायालय तक मामला पहुंचा, पर जांच अभी भी सतही

मामला माननीय उच्च न्यायालय तक पहुंच चुका है, मुख्य सचिव तक नोटिस जारी हो चुका है. यह कदम निश्चित ही गंभीरता का सूचक है, परंतु अदालत तक पहुंचना समाधान का अंत नहीं, बल्कि एक शुरुआत है. न्यायपालिका तभी प्रभावी निर्णय दे सकेगी, जब जांच तथ्य-आधारित हो, न कि 'औपचारिक'. इसलिए आवश्यक है कि बहस इस पर नहीं हो कि किसने आदेश दिया, किसने बयान दिया- बल्कि इस पर हो कि किसने अपनी तकनीकी जिम्मेदारी निभाने में चूक की.

राजनीति नहीं, व्यवस्था सुधार की दिशा में कदम

इस घटना ने यह भी स्पष्ट किया है कि जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी तकनीकी विशेषज्ञ नहीं होते. उनकी भूमिका नीति, स्वीकृति और संसाधन उपलब्ध कराने तक सीमित है. यदि इंजीनियरिंग तंत्र अपनी भूमिका ईमानदारी और दक्षता से नहीं निभाता, तो ऐसी घटनाएं बारम्बार होंगी.

इसलिए अब समय है कि...

- ✍ इंजीनियरिंग जिम्मेदारी तय हो
- ✍ डीपीआर की पारदर्शी जांच हो
- ✍ एमबी और निरीक्षण रिपोर्ट सार्वजनिक तथ्य बने
- ✍ जवाबदेही व्यक्तिगत स्तर तक तय की जाए

एक नजर में स्थानीय लोगों में गहरी चिंता और आक्रोश, सिस्टम की जवाबदेही पर उठा रहे गंभीर सवाल

भागीरथपुरा में नई लाइन डालने में भी लापरवाही के लग रहे आरोप

नवभारत न्यूज

इंदौर. शहर के भागीरथपुरा में दूषित पानी से बीमारी फैलने के बाद भी नई पाइपलाइन डालने में लापरवाही और भ्रष्टाचार के आरोपों के बीच, स्थानीय लोग भयभीत हैं और प्रशासन व नेताओं पर अनदेखी का आरोप लगा रहे हैं, जिससे पानी की गुणवत्ता और पाइपलाइन की स्थिति को लेकर गहरी चिंता और आक्रोश है. यहां के रहवासी दूषित पानी से मौतें और सिस्टम की जवाबदेही पर गंभीर सवाल उठा रहे हैं.

भागीरथपुरा में दूषित पानी के कारण बीमारियां फैलीं और लैब रिपोर्ट में पानी में घातक बैक्टीरिया पाए गए, जिससे लोगों की जान को खतरा है. नई पाइपलाइन डालने के काम में देरी और अनदेखी की जा रही है, जिससे लोगों में अधिकारियों और नेताओं के प्रति अविश्वास है. लोग बाहर से चुप दिख रहे हैं, लेकिन अंदर ही अंदर उनमें भारी गुस्सा है और वे पाइपलाइन के काम में भ्रष्टाचार की आशंका जता रहे हैं. इस त्रासदी ने सिस्टम से जवाब मांगा है, क्योंकि जिस पानी से जीवन चलता है, वही मौत का कारण बन गया है. यह स्थिति भागीरथपुरा के निवासियों के लिए गंभीर चिंता का विषय है, जहां पानी की गुणवत्ता और बुनियादी सुविधाओं की कमी साफ दिख रही है और लोग जल्द से जल्द इस समस्या का समाधान चाहते हैं. करीब दो हफ्ते बाद क्षेत्र में कुछ सामान्य स्थिति की बात की जा रही है, लेकिन नवभारत द्वारा क्षेत्र का जायजा लेने पर कई बातें सामने आई हैं. पाइप लाईन में लीकेज ढूंढने के लिए क्षेत्र में सीवरेज लाईन के पाईट चेक किए जा रहे हैं, जहां सीवरेज लाईन बदली जा रही है, वहां देखा गया कि नगर निगम के बजट में बड़े पाईप पास किए गए, लेकिन साथ में छोटे पाईप भी डाले जा रहे हैं, जिससे आसपास के लोगों ने नाराजगी जताई है. इसमें रहवासियों को भ्रष्टाचार का संदेह हो रहा है. दूसरी ओर, जहां क्षेत्र में डॉक्टरों की टीम हर गली में घर-घर घूम रही थी, अब वह भी कम होती नजर आ रही है. जिन मरीजों की असपताल से छुट्टी हो चुकी है, अभी वह पूरी तरह से ठीक नहीं हुए हैं. क्षेत्र में पानी की पूर्ति के लिए छोटे-बड़े पानी के 50 टैंकर लगा रखे हैं, जो पानी की पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं. कई गलियों में टैंकर पहुंच ही नहीं रहा. जबकि घटना के बाद दो सौ टैंकर क्षेत्र में पानी वितरण कर रहे थे. निगम ने इसमें भी कटौती कर दी है. पानी को लेकर अब भी लोगों में बहुत ही डर देखने को मिल रहा है. लोग आरओ का पानी इस्तेमाल कर रहे हैं, जबकि निगम टैंकर का पानी दूसरे कार्यों में काम ले रहे हैं.

यह बोले रहवासी...

कार्य तो अच्छा चल रहा है, लेकिन जो पाईप हैं, वह भविष्य को देखते हुए बड़े डलने चाहिए, नहीं तो 5-6 साल बाद दोबारा समस्या बन सकती है. कार्य में गति भी लाई जाए, लोगों को काफी परेशानी हो रही है.

- राहुल बिंजवा

कहीं सीवरेज या पानी की लाईन लीकेज न हो, इसके लिए आगे से अब समय-समय पर लाईन की जांच करनी चाहिए. दोबारा ऐसा हादसा न हो, इसे ध्यान में रखकर पानी और सीवरेज की लाईन डालना चाहिए.

- देवेंद्र सांवलिया

पीने के पानी को लेकर सभी में डर बना हुआ है, निगम जो पानी के टैंकर क्षेत्र में पहुंचा रहा है, हम उसका पानी दूसरे काम में ले रहे हैं, पीने के लिए आरओ का पानी खरीदकर में ले रहे हैं.

- शकुंतला कटारिया

क्षेत्र में अधिकारी तो आ रहे हैं, डॉक्टर भी आ जाते हैं, पूछते हैं कोई बीमार तो नहीं पहले तो डॉक्टर यहीं बैठते थे, अब नहीं आ रहे हैं. पानी के नल तो बिलकुल बंद कर रखे हैं.

- रती बाई

नर्मदा पाइप लाईन और सीवरेज पाईट चेक कर रहे हैं. पहले तो सफाई नहीं होती थी, घटना के बाद से तो सभी दूर कार्य चल रहा है. अभी चार दिन पहले ही घरों के पीछे की लाईन साफ कर दी गई है.

- कमल कुशवाहा

पहले ही क्षेत्र में सफाई और ध्यान रखते तो ऐसी दुखद घटना नहीं होती, कितने लोग दुनिया से चले गए. दूषित पानी पीने से मैं खुद भी पांच दिन अस्पताल में भरती रही हूं, अभी कमजोरी बहुत ज़्यादा है.

- मोहिनी तेंदोरिया

मेरे घर में दो लोग अभी भी बीमार हैं, मेरा पेट अभी तक फूला हुआ है, मर गए तो कौन उठाने आएगा.

यहां अपने-अपने चहेतों को सुविधा पहुंचाते रहे हैं, किस को बोलें किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता.

- गर्वेश दानी

राजू भटकारे वाली गली में कई लोगों को पानी के लिए परेशानी उठानी पड़ रही है. निगम के टैंकर सीधे निकल जाते हैं, रोको तो रुकते भी नहीं हैं, अधिकारी को कहो तो वह भी नहीं सुनते.

- ममता मांगले